अध्ययन सामग्री

एम॰ ए॰ सेमेस्टर 2

CC IX UNIT 3

डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰, आरा

13·08·20

उत्तररामचरितम्

'उत्तररामचरितम्' नाटक के आधार पर नायक राम की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तररामचरित में साक्षात् परब्रह्म परमात्मा मर्यादा पुरुषोत्तम, सम्पूर्ण भुवनों के नाथ, शरणागतवत्सल श्रीराम को नायक के रूप में प्रस्तुत करके उनके जीवन की उत्तरकालीन घटनाओं को नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया है। शम्बूक कहता है —

अन्वेष्टव्यो यदसिभुवनेलोकनाथः शरण्यो।

भवभूति ने राम को आदर्श एवं मर्यादा पुरुषोत्तम रूप में प्रदर्शित किया है। वे आदर्श राजा हैं, अपने सुख-दुःख की चिन्ता से निरपेक्ष हैं। वे प्रजापालक हैं और प्रजाहित के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने हेतु तत्पर हैं। तभी तो उन्होंने यह उद्घोषणा कर दी कि प्रजा की प्रसन्नता के लिए अपना सर्वस्व त्यागने में मैं हमें कोई संकोच नहीं है, यहाँ तक कि जगत् जननी को त्यागने में कोई कष्ट न होगा —

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥

और ऐसा करके वे प्रजा के सामने अपनी व्यथा भी व्यक्त नहीं करते। यद्यपि वे सीता को तीर्थ जल और अग्नि की तरह शुद्ध एवं

पवित्र मानते हैं, फिर भी लोकापवाद से भयभीत हैं, क्योंकि किसी भी कार्य द्वारा लोकानुरञ्जन करना सज्जनों का श्रेष्ठ कार्य है—

सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम् ।
यत्पूरितं हि तातेन मां च प्राणांश्च मुञ्चता ॥

<u>दाम्पत्य-प्रणय के आदर्श</u> — श्रीराम को भवभूति ने दाम्पत्य-प्रणय के आदर्श को प्रस्तुत करने का माध्यम बनाया है। वे सीता से प्रगाढ़ प्रेम करते हैं, अतः लोकानुरञ्जन के हेतु उनको त्यागने का निश्चय करके भी वे बहुत दुःखी हैं। सीता के प्रति उनकी उदार धारणा उनके प्रगाढ़ प्रेम को व्यक्त करती है। वे कहते हैं—

हा देवि देवयजनसंभवे ! हा स्वजन्मानुग्रहपवित्रित वसुन्धरे !
हा मुनिजनकनन्दिनि ! हा पावकवसिष्ठारुन्धतीप्रशस्तशीलशालिनि !
हा राममयजीविते ! हा महारण्यवास प्रियसखि ! हा तातप्रिये !
हा स्तोकवादिनि ! कथमेवंविधायास्तवायमीदृशः परिणामः ?

राम के हृदय में सीता के सम्बन्ध में बड़ी उदार भावना है। वे उनके परित्याग की कल्पना से विचलित हो उठे हैं। वे कहते हैं कि तुमसे जगत् पवित्र है, तुमसे लोक सनाथ है, तुम्हारे अनाथ होने पर मुझे महान् कष्ट होगा। सीता के परित्यागजन्य दुःख से राम का शोकावेग उत्तररामचरित के तृतीय अंक में कारुण्यधारा के रूप में प्रवाहित हुआ है, जिससे पत्थर भी रो पड़ते हैं। राम दाम्पत्य जीवन का महान् आदर्श प्रस्तुत करते हैं। सीता के विश्लेषजन्य दुःख से वे अत्यन्त क्षीण, धूसर वर्ण, कृशगात हो गए हैं और उन्हें पहचानना भी कठिन हो गया है। सीता के वियोग सन्ताप से उनका हृदय विदीर्ण हो रहा है, सारा संसार शून्य प्रतीत होता है। वे सतत अन्तर्ज्वाला से दग्ध हो रहे हैं। उनका अवसादयुक्त हृदय अन्धकार में डूब रहा है तथा उन्हें बार-बार मूर्च्छा आ रही है—

हा हा देवि स्फुटति हृदयं ध्वंसते देहबन्धः
शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तर्ज्वलामि ।

सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा
विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि ॥

सारांश यह है कि सीता के प्रति राम का प्रगाढ़ प्रेम है। वे एक पत्नीव्रतधारी हैं, इसीलिए अश्वमेध यज्ञ में हिरण्यमयी सीता की प्रतिकृति को अर्द्धांगिनी का स्थान देते हैं।

<u>प्रजारञ्जन का आदर्श</u> — राम इक्ष्वाकुकुल केशरी हैं। उनमें अपनी वंश-परम्परा के गुण विद्यमान हैं। "इक्ष्वाकूणां कुलधन-मिदं यत्समाराधनीयः कृत्स्नो लोकः।"

इसीलिए तो वे अपनी प्राणप्रिया के वियोगजन्य असीम सन्ताप को भी सहन करते हुए प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य को नहीं भूलते और शम्बूकवध के लिए स्वयं प्रस्थान करते हैं तथा उत्पाती लवणासुर को मारने के लिए तुरन्त ही शत्रुघ्न को भेजते हैं। आदर्श प्रणयी होते हुए भी वे भावना से कर्तव्य को बाधित नहीं होने देते।

राम की इसी विशेषता को लक्ष्य करके वनदेवता वासन्ती ने कहा है — वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणाँ चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ॥

भवभूति ने राम को आदर्श रूप में चित्रित किया है। वे इस नाटक के नायक हैं। इसमें इनके दिव्य चरित्र का भावात्मक वर्णन है। कवि ने उनके माध्यम से अपने प्रतिपाद्य एकमात्र रस-करुण रस - की मार्मिक अभिव्यञ्जना की है। इसमें राम के आदर्श प्रजापालक, आदर्श पतिरूप, आदर्श मित्र एवं आदर्श सहृदय रूप की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।